महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

सी.बी.सी. एस. के अन्तर्गत बी.ए. हिन्दी पाठयक्रम

सत्र 2023–24 से प्रभावी

Semester	Core Course 6 Credits	AECC 2 Credits	SEC 2 Credits	DSE 6 Credits	GE	Total Credit
1 ODD Sem.	HIN 4.5 DCC 12-A भारतीय साहित्य–परंपरा और आदिकाल HIN 4.5 DCC 12-B हिंदी साहित्य का भक्ति कालः निर्गुण भक्ति काव्य	HIN 4.5 AECC 11 हिंदी भाषा, व्याकरण और सम्प्रेषण				20
II EVEN Sem.	HIN 4.5 DCC 22-A हिंदी साहित्य का भक्तिकाल : सगुण भक्ति काव्य HIN 4.5 DCC 22-B हिंदी साहित्य का रीति काव्य	AECC 21 Environmental Science				20

Scheme of Examination

B.A. Hindi Pass Course- 2023-24

Semester	Code	Paper Code	Credits	Time duration per week	Max. Marks	Minimum Passing%(Aggre-gate)	Conti. Assess-ment 20%	Semester End Exam 80%
I ODD Sem.	DCC	HIN 4.5 DCC 12-A	3(2L+1T)	3	75	36%	15	60
		HIN 4.5 DCC 12 -B	3(2L+1T)	3	75	36%	15	60
	AECC	HIN 4.5 AECC 11	2	2	100	36% Non – CGPA (Qualifying) Satisfactory/ Un Satisfactory	-	100
II EVEN Sem.	DCC	HIN 4.5 DCC 22-A	3(2L+1T)	3	75	36%	15	60
		HIN 4.5 DCC 22-B	3(2L+1T)	3	75	36%	15	60

AECC Course 1

Semester 1

हिन्दी भाषा, व्याकरण एवं संप्रेषण

(Faculty of Arts)

Contact Hour/week-02

Contact Hour/semester-30

Credits Assigned-02

Paper Code- HINDI 4.5 AECC 11

उद्देश्य (Objective):– इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्र में भाषिक दक्षता और शुद्धता सबंधी ज्ञान का सघन संचार करना है जिससे दैनन्दिन जीवन में भाषा व्यवहार के जरिये वह अपनी अद्वितीयता को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त कर सके।

परिणाम (Out Come):– पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी को भाषा के जन्म, प्रकृति, लक्षण, वैशिष्टय, प्रकार आदि का बोध होगा। उसके भाषा व्यवहार में शुद्धता आयेगी। सम्प्रेषण बढ़ेगा, रोजगार, लेखन, कार्यालय कार्यों में गति व प्रभाव का विस्तार होगा। वह विभिन्न प्रकार की पत्र लेखन शैलियों एवं निबंध लेखन में प्रवीण होगा। संक्षेपण एवं पल्लवन से भाषा में लाघव, संश्लेषण एवं विश्लेषण की क्षमता विकसित होगी।

इकाई I भाषा से तात्पर्य, भाषा की परिभाषा, प्रकृति एवं विविध रूप

हिंदी भाषा की विशेषताएं: क्रिया, विभक्ति, सर्वनाम, विशेषण एवं अव्यय संबंधी

हिंदी की वर्ण व्यवस्था, शब्द भंडार

इकाई II संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय

इकाई III वाक्य रचना, वाक्य शुद्धि, शब्द शुद्धि, समानार्थक शब्द, समश्रुत भिन्नार्थक शब्द, विलोम शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ

इकाई IV पत्र लेखनः शासकीय पत्र, अर्द्धशासकीय पत्र, आवेदन पत्र, शिकायती पत्र, व्यावसायिक पत्र

प्रारूपः निविदा, विज्ञप्ति, अधिसूचना, परिपत्र

इकाई V संक्षेपण, पल्लवन, निबंध

सहायक पुस्तकें:–

1. हिन्दी व्याकरणः कामता प्रसाद गुरू
2. मानक हिंदी का स्वरूपः भोलानाथ तिवारी
3. संक्षेपण और पल्लवनः कैलाशचंद्र भाटिया/तुमन सिंह
4. पत्र व्यवहार निर्देशिकाः भोलानाथ तिवारी, विजय कुलश्रेष्ठ

5. राजकाज में हिन्दीः हरदेव बाहरी
6. व्यावहारिक हिंदी व्याकरण एवं रचनाः हरदेव बाहरी

AECC Course 1

Semester 1

हिन्दी भाषा, व्याकरण एवं संप्रेषण

(Faculty of Science)

Contact Hour/week-02

Contact Hour/semester-30

Credits Assigned-02

Paper Code- HINDI 4.5 AECC 11

उद्देश्य (Objective):– इस पाठ्यक्रम का उद्देदश्य छात्र में भाषिक दक्षता और शुद्धता सबंधी ज्ञान का सघन संचार करना है जिससे दैनन्दिन जीवन में भाषा व्यवहार के जरिये वह अपनी अद्वितीयता को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त कर सके।

परिणाम (Out Come):– पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी को भाषा के जन्म, प्रकृति, लक्षण, वैशिष्टय, प्रकार आदि का बोध होगा। उसके भाषा व्यवहार में शुद्धता आयेगी। सम्प्रेषण बढ़ेगा, रोजगार, लेखन, कार्यालय कार्यों में गति व प्रभाव का विस्तार होगा। वह विभिन्न प्रकार की पत्र लेखन शैलियों एवं निबंध लेखन में प्रवीण होगा। संक्षेपण एवं पल्लवन से भाषा में लाघव, संश्लेषण एवं विश्लेषण की क्षमता विकसित होगी।

इकाई I भाषा से तात्पर्य, भाषा की परिभाषा, प्रकृति एवं विविध रूप

हिंदी भाषा की विशेषताएंः क्रिया, विभक्ति, सर्वनाम, विशेषण एवं अव्यय संबंधी

हिंदी की वर्ण व्यवस्था, शब्द भंडार

इकाई II संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय

इकाई III वाक्य रचना, वाक्य शुद्धि, शब्द शुद्धि, समानार्थक शब्द, समश्रुत भिन्नार्थक शब्द, विलोम शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ

इकाई IV पत्र लेखनः शासकीय पत्र, अर्द्धशासकीय पत्र, आवेदन पत्र, शिकायती पत्र, व्यावसायिक पत्र

प्रारूपः निविदा, विज्ञप्ति, अधिसूचना, परिपत्र

इकाई V संक्षेपण, पल्लवन, निबंध

सहायक पुस्तकें:–

1. हिन्दी व्याकरणः कामता प्रसाद गुरू
2. मानक हिंदी का स्वरूपः भोलानाथ तिवारी
3. संक्षेपण और पल्लवनः कैलाशचंद्र भाटिया/तुमन सिंह
4. पत्र व्यवहार निर्देशिकाः भोलानाथ तिवारी, विजय कुलश्रेष्ठ
5. राजकाज में हिन्दीः हरदेव बाहरी
6. व्यावहारिक हिंदी व्याकरण एवं रचनाः हरदेव बाहरी

AECC Course 1

Semester 1

हिन्दी भाषा, व्याकरण एवं संप्रेषण

(Faculty of commerce)

Contact Hour/week-02

Contact Hour/semester-30

Credits Assigned-02

Paper Code- HINDI 4.5 AECC 11

उद्देश्य (Objective):– इस पाठ्यक्रम का उद्देदश्य छात्र में भाषिक दक्षता और शुद्धता सबंधी ज्ञान का सघन संचार करना है जिससे दैनन्दिन जीवन में भाषा व्यवहार के जरिये वह अपनी अद्वितीयता को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त कर सके।

परिणाम (Out Come):– पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी को भाषा के जन्म, प्रकृति, लक्षण, वैशिष्टय, प्रकार आदि का बोध होगा। उसके भाषा व्यवहार में शुद्धता आयेगी। सम्प्रेषण बढ़ेगा, रोजगार, लेखन, कार्यालय कार्यों में गति व प्रभाव का विस्तार होगा। वह विभिन्न प्रकार की पत्र लेखन शैलियों एवं निबंध लेखन में प्रवीण होगा। संक्षेपण एवं पल्लवन से भाषा में लाघव, संश्लेषण एवं विश्लेषण की क्षमता विकसित होगी।

इकाई I भाषा से तात्पर्य, भाषा की परिभाषा, प्रकृति एवं विविध रूप

हिंदी भाषा की विशेषताएंः क्रिया, विभक्ति, सर्वनाम, विशेषण एवं अव्यय संबंधी

हिंदी की वर्ण व्यवस्था, शब्द भंडार

इकाई II संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय

इकाई III वाक्य रचना, वाक्य शुद्धि, शब्द शुद्धि, समानार्थक शब्द, समश्रुत भिन्नार्थक शब्द, विलोम शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ

इकाई IV पत्र लेखनः शासकीय पत्र, अर्द्धशासकीय पत्र, आवेदन पत्र, शिकायती पत्र, व्यावसायिक पत्र

प्रारूपः निविदा, विज्ञप्ति, अधिसूचना, परिपत्र

इकाई V संक्षेपण, पल्लवन, निबंध

सहायक पुस्तकेंः–

1. हिन्दी व्याकरणः कामता प्रसाद गुरू
2. मानक हिंदी का स्वरूपः भोलानाथ तिवारी
3. संक्षेपण और पल्लवनः कैलाशचंद्र भाटिया/तुमन सिंह
4. पत्र व्यवहार निर्देशिकाः भोलानाथ तिवारी, विजय कुलश्रेष्ठ
5. राजकाज में हिन्दीः हरदेव बाहरी
6. व्यावहारिक हिंदी व्याकरण एवं रचनाः हरदेव बाहरी

AECC Course 1

Semester 1

हिन्दी भाषा, व्याकरण एवं संप्रेषण

Paper Code- HINDI 4.5 AECC 11

(Arts/Science/Commerce Faculty)

प्रश्न पत्र पद्धति

कुल अंकः– 100

प्रश्न पत्र 5 इकाइयों में विभक्त होगा। प्रत्येक इकाई के 20 अंक होगें।

प्रत्येक इकाई का अंकभार समान होगा।

प्रथम तीन इकाइयों से 10–10 प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा। आवश्यकतानुसार किसी इकाई के प्रवृत्ति–अनुकूल प्रश्नों की संख्या कम की जा सकती है, लेकिन इकाई का अंकभार समान रहेगा।

अंतिम दो इकाइयों से 10–10 अंक के दो प्रश्न पूछे जाएंगे।

सभी प्रश्न करने अनिवार्य होंगे।

Core Course 1

Semester 1

A- भारतीय साहित्य–परंपरा और आदिकाल

Contact Hour/week-03

Contact Hour/semester-45

Credits Assigned-03

Paper Code- HIN 4.5 DCC 12-A

उद्देश्य (Objective):– इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी को भारतीय साहित्यिक परपंरा के नैरंतर्य में हिन्दी साहित्य के आदिकाल का अध्ययन करवाना है जिससे विद्यार्थी को अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओ का बोध हो सके और वह भारतीय भाषाओं की एकात्मता को हृदयंगम कर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान कर सके। उसके हृदयस्थ सात्विक भावों को जागृत किया जा सके।

परिणाम (Out Come):– इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी की साहित्यिक अवधारणाओं की समझ एवं बोधगम्यता बढ़ेगी। औपनिवेशिक दृष्टि से मुक्त होकर वह राष्ट्रीय सांस्कृतिक दृष्टि से साहित्य को समझ सकेगा। वह आदिकालीन कवियों के काव्य, भाषा एवं प्रतीकों से परिचित होकर उनकी व्यापक भाव सम्पदा से तादात्म्य स्थापित करते हुए हृदय की मुक्तावस्था को प्राप्त होगा। उसके ज्ञान का संवेदनात्मक पक्ष मजबूत होगा।

इकाई I भारतीय साहित्य परंपराः वैदिक साहित्य, प्राकृत–पालि, लौकिक संस्कृत, अपभ्रंश एवं तमिल साहित्य का संक्षिप्त परिचय।

इकाई II साहित्य का इतिहास दर्शन, हिन्दी साहित्येतिहास लेखन पंरपरा, हिन्दी साहित्येतिहास की समस्याएं।

इकाई. III आदिकालः परिस्थितियाँ, नामकरण, सीमांकन, कवि एवं काव्य रचनाएँ, काव्य–प्रवृत्तियां, उपलब्धियां।

इकाई. IV (i) पद्मावती समय– पृथ्वीराज रासौ, सम्पादकः प्रो. भारत भूषण 'सरोज' एवं डॉ. ओमप्रकाश सिंघल

पदः–

मनहु कला संसिभान, कला सोलह सौ बन्निय

कुटिल केश, सुदेष, पोहप रचियत पिक्कसद

सोधी जुगति कौ कंत कियो तब चित चहौं दिस

प्रिय प्रथिराज नरेश, जोग लिषि कग्गर दिन्नो।

उहै घरी पलनी उहै दिना वैर उहै सजि।

सुन गज्जनै आवाज, चढ्यो साहाबदीन बर

बज्जिय घोर निसाँन, राँन चौहान चहों दिसि।

निकट नगर जब जान, जाय वर बिंद उभय भय।

भई जु आनि अवाज, आप सहाबदीन सुर।

ना को हार नह जित, रहेइ न रहिये सूखर।

(ii) ढोला मारू रा दूहा– संपादकः नरोत्तम दास स्वामी, सूर्यकरण पारीक, रामसिंह

मरूधर परिचयः–

देस विरंगउ ढोलणा दुखी हुअया ईहां आई

करहा देस सुहामणउ जे मूँ सासरवाड़ि।

करहा लंब–कराड़िया, बे–बे अंगुल कन्न।

बाळऊं, बाबा देसड़उ, पाँणी जिहाँ कुवाँह

बाळऊं, बाबा देसड़उ, पाँणी सन्दी ताति

बाबा, म देइस मारुवाँ, सूधा एवाळाँह

बाबा म देइस मारुवाँ, वर कूँआरि रहेसि

मारु, थाँकइ देसड़इ, एक न भाजइ रिड्ड

जिण भुई पन्नग पीवणा, कयर–कँटाळा रूँख

पहिरण–ओढण कंबळा, साठे पुरिसे नीर

इकाई. V (i) भनइ विद्यापति– संपादकः कृष्ण मोहन झा

जय जय संकर जय त्रिपुरारि

नन्दनक नन्दन कदम्बक तरु तर,

देख देख राधा रूप अपार

आजु पेखल नन्द किसोर

सजनी कान्ह कें कहब बुझाइ

पथ–गति पेखलि मएँ राधा

सैसव जोवन दुहु मिलि गेल

अनुखन माधव माधव सुमरइत

(ii) अमीर खुसरोः– संपादकः भोलानाथ तिवारी

दोहेः–

अपनी छवि बनाइ के

आ साजन मोरे नयनन में

खुसरो रैन, सुहाग की

गोरी सोवे सेज पर

खुसरो दरिया प्रेम का

मुकरियाः–

आप हिले और मोहे हिलाए

ऊँची अटारी पलंग बिछायो

लिपट लिपट के वा के सोई

सेज पड़ी मोरे आँखों आए

शोभा सदा बढ़ावन हारा

गीतः–

छाप तिलक सब छीन्हीं रे

जब यार देखा नैन भर

सकल बन फूल रही सरसों

सहायक पुस्तकेंः–

1. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहासः डॉ. नगेन्द्र
2. भारतीय साहित्यः मूलचंद गौतम
3. साहित्य की भारतीय पंरपराः श्री भगवान सिंह
4. भारतीय साहित्यः रामछबीला त्रिपाठी
5. हिन्दी साहित्य का इतिहासः आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
6. हिन्दी साहित्य का इतिहासः डॉ. नगेन्द्र
7. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहासः डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त
8. हिन्दी साहित्य की भूमिकाः आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
9. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँः– डॉ. शिवकुमार शर्मा
10. हिन्दी साहित्य का अतीतः आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
11. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहासः डॉ. बच्चन सिंह
12. हिन्दी साहित्य ओर सवेंदना का विकासः डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
13. आदिकालीन साहित्यः डॉ. हरीश

14. विद्यापतिः शिव प्रसाद सिंह
15. विद्यापति का काव्यः डॉ. कृष्ण देव भाटी
16. रासो विमर्शः डॉ. माताप्रसाद गुप्त
17. विद्यापतिः डॉ. आनन्द प्रकाश दिक्षित
18. अमीर खुसरो का हिन्दी काव्यः गोपी चंद नारंग
19. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहासः रामकुमार वर्मा
20. हिन्दी साहित्य का अतीत (भाग 1, 2) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
21. हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कविः द्वारका प्रसाद सक्सेना

Core Course 1

Semester 1

B- हिन्दी साहित्य का भक्तिकालः निर्गुण भक्ति काव्य

Contact Hour/week-03
Contact Hour/semester-45
Credits Assigned-03
Paper Code- HIN 4.5 DCC 12-B

उद्देश्य(Objective):-

छात्र को पूर्व मध्यकालीन परिवेश के संबंध में भक्तिकाव्य का अध्ययन करवाना, जिससे वह भक्त कवियों की सामाजिक सांस्कृतिक भूमिका और उनके काव्य के दार्शनिक आधारों को समझ सके एवं वह अपने इतिहास, समाज, काव्य, भाषा, धर्म और परंपरा के प्रति श्रद्धावान बन सके। इससे छात्र के रचनात्मक विवेक एवं कल्पना शक्ति को भी विकसित किया जा सकेगा।

परिणाम (Out Come):-

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र भक्तिकाल की परिस्थितियों को समझकर भक्ति के दार्शनिक आधार, निर्गुण भक्ति काव्य के मूल स्त्रोत एवं परंपरा से परिचित होगा। भक्ति के अखिल भारतीय स्वरूप से परिचित होकर वह राष्ट्र के सांस्कृतिक एकात्मता को हृदयंगम कर सकेगा। कबीर, रैदास, जायसी, सुन्दरदास आदि की रचनाओ के अध्ययन से उसके आलोचनात्मक विवेक भाव क्षेत्र का विस्तार होगा।

इकाई I भक्तिकालः सीमांकन, परिस्थितियां, भक्ति का दार्शनिक आधार, वर्गीकरण, भक्ति काव्य की प्रवृत्तियां, भक्ति आन्दोलन का अखिल भारतीय स्वरूप।

इकाई II संत काव्यः पृष्ठभूमि, संत कवि एवं रचनाएं, वैशिष्ट्य, काव्य प्रवृत्तियां।

इकाई III प्रेमाख्यान काव्यः उद्गम स्त्रोत एवं पूर्व परंपरा, कवि एवं रचनाएं, वैशिष्ट्य, प्रवृत्तियां।

इकाई IV कबीर ग्रंथावलीः संपादक श्यामसुन्दर दास।

पदः–

दुलहनी गावहु मंगलचार
बहुत दिनन थै में प्रीतम पाये
संतौ भाई आई ग्यान की आँधी रे
मन रे जागत रहिये भाई
पाण्डे कौन कुमति तोहि लागी
हम न मरैं मरिहैं संसारा

साखियाँः–

हँसैं न बोले उनमनी, चंचल मेल्ह्या मारि
सतगुर सांचा सूरिवाँ, तातै लोहिं लुहार
कबीर निरभै रामजपि जब लग दीवै बाति
जिहिं घटि प्रीति न प्रेमरस
कबीर प्रेम न चाषिया, चषि न लीया साव
रात्यूँ रूँनी बिरहनीं ज्यूँ बंचौ कूँ कुंज
विरहनि ऊभी पंथ सिरि पंथी बूझै धाइ
सब रग तंत रबाब तन, विरह बजावै नित
आँषड़ियाँ झाई पड़ी, पंथ निहारि निहारी
प्यंजर प्रेम प्रकासिया, अंतरि भया उजास
मनलागा उन मन सो, उन मन मनहि बिलग
सुरति समाँणो निरति मैं, निरति रही निरधार

(ii) रैदास बानीः संपादकः डॉ. शुकदेव सिंह

पदः–

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी
भाई रे भ्रम भगति सुजांनि
अब कैसे छूटे राम रट लागी
आज दिवस लेऊं बलिहारा
कान्हा हो जग जीवन मोरा
रामंहि पूजा कहां चढ़ाँऊ
माधौ! संगति सरनि तुम्हारी
रथ को चतुर चलावन हारो
जो तुम तोरौ राम मैनही तोरौं
पांडे! हरी विचि अंतर डाढ़ा

इकाई V (i) जायसी – संपादकः डॉ. श्री निवास शर्मा

सिंघलद्धीप खंडः–

सिंघलदीप कथा अब गावौं।
मानसरोदक बरनौं काहा।
पानि भरै आवहिं पनिहारी।
आस–पास बहु अमृत बारी।

पुनि फुलवारि लागि चहुँ पासा।
पुनि आए सिंघल गढ़ पासा,
नव पौरी पर दसवँ दुवारा।
पुनि बाँधे रजबार तुरंगा।
मुकुट बाँधि सब बैठे राजा।
वरनौं राजमंदिर रनिवासू।

(ii) सुंदर ग्रथांवलीः संपादकः पुरोहित श्री हरि नारायण शर्मा
पलु ही में मरिजात पलु ही में जीवत है
काम जब जागै तब गनत न कोऊं साप
रंक को नचावे अभिलाषा धन पाइवे की
जोग करै जाग करै वेद विधि त्याग करै
गेह तज्यो अरू नेह तज्यो
बोलिए तो तब जब
पति सूं ही प्रेम होय
सुनत नगारे चोट

सहायक पुस्तकेंः–

1. संत काव्यः परशुराम चतुर्वेदी
2. संत काव्य की सामाजिक प्रासंगिकताः रवीन्द्र कुमार सिंह
3. हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदायः डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थ्थवाल
4. भक्ति आन्दोलन और भक्ति काव्यः शिव कुमार मिश्र
5. उत्तरी भारत की संत परंपराः परशुराम चतुर्वेदी
6. मध्ययुगीन प्रेमाख्यानः डॉ. श्याम मनोहर पाण्डेय
7. हिंदी सूफी काव्य की भूमिकाः रामपूजन तिवारी
8. हिंदी साहित्य का इतिहासः डॉ. नगेन्द्र
9. कबीरः विजयेन्द्र स्नातक
10. कबीरः आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
11. जायसीः विजयदेव नारायण साही
12. जायसी ग्रथांवलीः सम्पादक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
13. सूफी मतः कन्हैया सिंह

Core Course II

Semester II

A- हिंदी साहित्य का भक्तिकालः सगुण भक्ति काव्य

Contact Hour/week-03

Contact Hour/semester-45

Credits Assigned-03

Paper Code- HIN 4.5 DCC 22-A

उद्देश्य (Objective):-

विद्यार्थी को हिंदी साहित्य की सगुण भक्ति काव्य परंपरा से परिचय करवाना एवं प्रमुख कवियों के सरस काव्यांशों के अध्यापन से मानव मूल्यों एवं अपनी परंपरा के प्रति जिज्ञासा एवं समर्पण का भाव का उत्पन्न करना।

परिणाम (Out Come):-

सगुण भक्ति काव्य के अध्ययनोपंरात छात्र में श्रद्धा, विश्वास, समर्पण, परोपकार, करूणा, पारिवारिक–सामाजिक सौहार्द, मर्यादा, कर्मशीलता आदि गुणों का समुचित विकास होगा। तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई एवं रसखान के सरस काव्यांशों के अध्ययन से आलोचनात्मक विवेक एवं विश्लेषण क्षमता का विकास होगा। संवेदनशीलता में विस्तार होगा एवं साहित्य की गहरी समझ विकसित होगी।

इकाई I सगुण भक्ति काव्यः पृष्ठभूमि, वैष्णव भक्ति का उदय, प्रतिष्ठापक आचार्य, सगुण–निर्गुण, साम्य–वैषम्य, वैशिष्ट्य।

इकाई II रामभक्ति काव्यः पृष्ठभूमि, रामभक्त कवि एवं काव्य, काव्य प्रवृत्तियां, 'रामचरित मानस' का स्थान।

इकाई III कृष्णभक्ति काव्यः पृष्ठभूमि, कृष्णभक्त कवि एवं उनका काव्य, पुष्टि मार्ग–अष्टछाप, काव्य प्रवृत्तियां, रामभक्ति काव्य एवं कृष्ण भक्ति काव्य में साम्य–वैषम्य।

इकाई IV (i) विनय पत्रिकाः तुलसीदास, सपांदकः वियोगी हरि।

पदः–

राम जपु, राम जपु, राम जपु, बावरे

ऐसी मूढ़ता या मन की

अस कछु समुझि परत रघुराया

माधव! मोह फांस क्यों टूटे

केशव, कहि न जाइ का कहिये

जौ निज मन परिहरै बिकारा

ऐसो कौ उदार जग माहीं

कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो

मन पछितै है अवसर बीते

मैं तोहि अब जान्यो संसार

(ii) भ्रमर गीत सार, सम्पादकः आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

पदः–

ऊधो अंखियां अति अनुरागी

आयो घोस बड़ो व्यापारी

ऊधो मन नाही दस–बीस

निर्गुण कौन देस को वासी

हमारे हरि हारिल की लकरी

उर में माखन चोर अड़े

मधुकर श्याम हमारे चोर

ऊधो भली करी ब्रज आए

बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं

लखियत कालिन्दीं अति कारी

इकाई V (i) मीरां पदावलीः सम्पादकः शम्भु सिंह मनोहर

पदः–

निपट बंकट छब अटकू

माई म्हां गोविन्द गुण गास्यां

राणाजी थे जहर दियौ म्है जाणी

मीरां मगन भई हरि के गुण गाय

जोगिया जी निसदिन जोऊं बाट

हरि बिन कूँण गती

सखी म्हारी नींद नसानी हों

मनरे परसि हरि के चरण।

बसो मेरे नैनन में नन्दलाल

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई

(ii) रसखान रचनावलीः सम्पादकः विद्यानिवास मिश्र, सत्यदेव मिश्र

पदः–

मानुस हौं तो वही रसखान

या लकुटी अरु कामरिया पर

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं

खेलत फाग सुहाग भरी

कान्ह भये बस बाँसुरी के

कहा कहू सजनी संग की

प्रेम पगे जू रंगे रंग सांवरे

आवत हैं बन तैं मनमोहन

सहायक पुस्तकेः–

1. रसखानः जीवन और कृतित्व – देवेन्द्र प्रताप उपाध्याय
2. रसखान ग्रंथावली – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
3. हिंदी के मुसलमान कवियो का प्रेम काव्य – गुरूदेव प्रसाद वर्मा
4. पचरंग चोला पहन सखी री– माधव हाड़ा
5. मीरा मंदाकिनी – नरोत्तम दास स्वामी
6. मीरा का काव्य – विश्वनाथ त्रिपाठी
7. सूर का भ्रमर गीत – डॉ. शंकर देव अवतरे
8. सूरदास – ब्रजेश्वर वर्मा
9. सूर की काव्य कला– डॉ. मनमोहन गौतम
10. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
11. सूर सौरभ – डॉ. नन्दकिशोर आचार्य
12. हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
13. लोकवादी तुलसीदासः विश्वनाथ त्रिपाठी
14. तुलसी काव्य मीमांसाः उदयभानु सिंह

Core Course II

Semester II

B- हिंदी साहित्य का रीति काव्य

Contact Hour/week-03

Contact Hour/semester-45

Credits Assigned-03

Paper Code- HIN 4.5 DCC 22-B

उद्देश्य (Objective):- उत्तर मध्यकालीन परिवेश में हिन्दी कवियों के रचना कर्म एवं काव्यांगों का ज्ञान करवाना, जिससे छात्र रीतिकाल की काव्य धाराओं एवं रचनाओं को सम्यक् रूप से समझ सके।

परिणाम (Out Come):- छात्र रीतिकालीन परिस्थितियों का विश्लेषण कर रीति काव्य से तादात्म्य स्थापित कर सकेगा। रस, अलंकार, छंद एवं काव्य के सैद्धान्तिक परिचय से उसके साहित्यिक ज्ञान को ठोस आधार प्राप्त होगा। बिहारी, भूषण, घनानंद एवं गिरिधर कविराय के काव्य के अनुशीलन से श्रृंगार, नीति, भक्ति एवं वीरत्व की सनातन धाराओं के प्रति समर्पण भाव एवं कलाबोध विकसित होगा।

इकाई I काव्य शास्त्रः काव्य का अर्थ, परिभाषा, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य गुण, काव्य दोष, नायक–नायिका भेद, शब्द शक्ति

इकाई II (i) रसः अर्थ, महत्त्व, रस के अवयव, प्रकार एवं उदाहरण

(ii) छंदः छंद से तात्पर्य, भेद, प्रमुख छंदः दोहा, चौपाई, कुंडलिया, कवित्त, गीतिका, हरिगीतिका, रोला, उल्लाला, सवैया, द्रुत विलंबित

(iii) अलंकारः अर्थ, महत्त्व, प्रमुख अलंकारः अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रांतिमान, दृष्टांत, अतिशयोक्ति

इकाई III रीतिकालः पृष्ठभूमि, नामकरण, प्रवर्तक, प्रमुख कवि एवं रचनाएं, प्रमुख काव्यधाराएं, रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त, प्रवृत्तियां, साम्य–वैषम्य

इकाई IV बिहारी रत्नाकरः संपादकः जगन्नाथ दास रत्नाकर

दोहेः–

मेरी भव बाधा हरो

सोहत ओढ़े पीत पट

अजौं तर्योना ही रह्यो

तो पर वारौ उरबसी

नेह न नैननि को कछू,

या अनुरागी चित की

लिखन बैठि जाकी सबी,

दृग उरझत टूटत कुटुम,

रनित भृंग घंटावली,

कब को टेरत दीन रट,

स्वारथु सुकृत न श्रमु बृथा,

कहत, नटत, रीझत, खिझत

नहिं परागु नहिं मधुर मधु,

मंगल बिन्दु सुरंगु,

तंत्री नाद कवित–रस,

कनक–कनक ते सौ गुनी

नर की अरू नलनीर की,

पत्रा हौं तिथि पाइयै

(ii) भूषण ग्रंथावलीः संपादकः विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

पदः–

शिवाजी का शौर्य वर्णन

देखत ऊँचाई उघरत पाघ, सुधी राह

पूरब के, उत्तर के, प्रबल पछाँह हू के

साजि चतुरंग सेन अंग में उमंग धारि,

बेद राखे विदित, पुरान राखे सार युत,

ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनवारी,

सबन के ऊपर ही ठाड़ो रहिबे के जोग

छत्रसाल का प्रताप वर्णन

भुज भुजगेस की वै संगिनी भुजंगिनी सी,

चाक चक चमू के अचाकचक चहुँ ओर,

रैया राव चम्पत्ति को चढ़ो छत्रसाल सिंह

राजत अखंड तेज छाजत सुजस बड़ो,

इकाई V (i) घनानंद कवित्तः संपादकः विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

पदः–

रूपनिधान सुजान सखी जब ते इन नैननि नेकु निहारे,

हीन भएं जल मोन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समानै

तब तौ छवि पीवत जीवत हे, अब सोचन लोचन जात जरे

भए अति निठुर, मिटाय पहिचानि डारी,

कारी कूर कोकिला, कहां को बैर काढ़ति री,

वहै मुसक्यानि, वहै मृदु बतरानि, वहै

अति सुधो सनेह को मारग है

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागत ज्यों ज्यों निहारिये

चोप चाह चावनि चकोर भयो चाहत ही

आंखिन मूंदिवो बात दिखावत,

(ii) गिरिधर कविराय ग्रंथावंलीः सपादंकः किशोरी लाल गुप्त

कुंडलिया

चिन्ता ज्वाल शरीर की, दाह लगै न बुझाय

फूटै घर को यूं भयो, जानत सकल जहान

साईं बैर न कीजिए, गुरू, पंडित, कवि, यार

बैरी, बंधुवा, बानियां, ज्वारी, चोर, लबार

साईं समय न चूकिए, यथाशक्ति सम्मान

दौलत पाय न कीजिए, सपने में अभिमान

पानी बाढौ नाव में, घर में बाढौ दाम

गुण के गाहक सहस नर, बिनु गुण लहै न कोय

बिना विचारे जो करे सो पीछे पछताय

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ

सहायक पुस्तकें:–

1. रीति काव्यः नन्द किशोर नवल
2. रीति काव्य की भूमिकाः डॉ. नगेन्द्र
3. बिहारी की वाग्विभूतिः विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
4. बिहारी का नया मूल्यांकनः बच्चन सिंह
5. घनानंद का काव्यः रामदेव शुक्ल
6. स्वच्छंद काव्य धारा और घनानंदः मनोहर लाल गौड़
7. भूषण ग्रंथावलीः संपादकः विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
8. हिंदी का कुंडलिया छन्द और साहित्यः डॉ. केशव प्रथम वीर
9. अलंकार पारिजातः नरोत्तम दास स्वामी
10. काव्य शास्त्रः भगीरथ मिश्र

Core Course: हिंदी साहित्य

प्रश्न–पत्र पद्धति

सत्रांत सैद्धान्तिक परीक्षा = 60 अंक

आंतरिक मूल्याकंन= 15 अंक

प्रत्येक कोर पाठ्यक्रम/प्रश्नपत्र में 5 इकाइयां होंगी।

प्रत्येक प्रश्न पत्र में तीन खंड होंगे।

प्रत्येक खंड 20 अंक का होगा।

प्रथम खण्ड में प्रत्येक इकाई से अधिकतम 2 प्रश्न रखते हुए सभी 5 इकाइयों से कुल 10 प्रश्न (लघूत्तरात्मक) पूछे जाएंगे– (10 X 2 = 20 अंक)

उत्तर शब्द सीमा = 50

द्वितीय खंड 2 भागों में विभाजित होगाः–

(i) दो व्याख्यात्मक प्रश्न होंगे, आंतरिक विकल्प देय होगा। (2 X 5 = 10)

(ii) दो छोटे आलोचनात्मक प्रश्न होंगे। आंतरिक विकल्प देय होगा। (2 X 5 = 10)

उत्तर शब्द सीमा = 200

तृतीय खंड में 5 इकाइयों में से 4 आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से दो प्रश्न हल करने होंगे।

प्रत्येक इकाई से अधिकतम 1 प्रश्न पूछा जायेगा। (2 X 10 = 20)

उत्तर शब्द सीमा = 500